जनवरी 2025

वर्ष 5 अंक 5

पहल पहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय	3

कहानियां

मम्मी ने कहा था	पवित्रा अग्रवाल	4
संघर्ष की कहानी	डॉ. कुसुम रानी	6
तारा	प्रज्ञा मिश्रा	12

कविताएं

मुकारक हो नया...	कृष्ण कुमार	09
पपीता	नेतलाल यादव	09
गुलाबी सर्दी	माणकचंद सुथार	10
चिड़ियाघर में...	डॉ. प्रदीप कुमार	10
शिशु गीत	गोविन्द भारद्धाज	11
बगुला भगत	पुरूषोत्तम व्यास	11
गणतंत्र दिवस	सुरेश चंद्र	22
चींटी रानी	प्रिया देवांगन	23
पंतग	राजेश पाठक	23
अमरूद	टीकेश्वर सिन्हा	24
बूझो तो जाने	डॉ. राकेश चक्र	24

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
बाल पहेलियां	गौरीशंकर वैश्य	14
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
जनवरी 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पर अंकित चित्र राम भादाणी द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

अपने लक्ष्यों के प्रति सजग रहें

प्यारे बच्चों
नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं !

जनवरी माह से हम नए वर्ष का आगमन करते है। यह महीना नए साल के आगमन के साथ–साथ हमारे लिए भी बहुत महत्त्व रखता है। इसी माह की 26 तारीख को हमारे देश में संविधान लागू हुआ। आज हम संसद से लेकर छोटी–छोटी सभाओं में संविधान के बारे में सुनते है। आपको पता है यह संविधान हमारे लिए क्यों जरूरी है ? तो चलिए कुछ जानते है अपने देश के संविधान के बारे में –

''भारत का संविधान भारतीय गणराज्य का सर्वोच्च कानून है। यह देश की राजनीतिक व्यवस्था के लिए रूपरेखा तैयार करता है, सरकार की संस्थाओं की शक्तियों एवं उत्तरदायित्वों को परिभाषित करता है। संविधान के द्वारा मौलिक अधिकारों की रक्षा के साथ–साथ शासन के सिद्धांतों को भी रेखांकित किया जाता है। संविधान में देश के प्रशासन का मार्गदर्शन करने वाले नियमों और विनियमों का एक समूह होता है।'' अगर एक पंक्ति में कहे तो यह हमारे देश को संचालित करने की एक मार्गदर्शिका है जिसकी पालना हम सभी को करनी चाहिए।

यह तो हुई हमारे कानून एवं अधिकारों की बात। मैं आपका ध्यान आपके लक्ष्य की ओर ले जाना चाहता हूं। हमें प्रतिवर्ष कुछ लक्ष्य बनाने चाहिए और इन लक्ष्यों की पूर्ति हेतु ईमानदारी से निरन्तर प्रयत्न करने चाहिए। साथ ही अपने लक्ष्यों के प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए। इससे आपका भविष्य सुदृढ होगा वहीं आपके सपनों को पूरा करने में सार्थक मदद मिलेगी।

जय हिन्द.....

संजय श्रीमाली

मम्मी ने कहा था

पवित्रा अग्रवाल

दिसंबर की छुट्टियां शुरू होते ही वरुण ने ऊँचा स्टूल लगा कर अलमारी पर से कुछ पतंगें और चरक, माँजा नीचे उतार लिया।

माँ ने कहा बेटा वरुण तुमने इतनी सारी पंतगें क्यों जमा की हुई हैं... जितनी जरूरत हो उतनी ही लाया करो। ...पड़े पड़े खराब भी होती हैं।

वरुण खुश होंकर बोला –– अरे मम्मी इनमें से एक भी मेरी खरीदी हुई नहीं हैं सब कट कर आई हुई पतंगें हैं।

तुम से मना किया हुआ है न, फिर भी तुम पंतगें लूटते हो ?

अरे माँ अपनी छत इतनी बड़ी है कि पतंगें अपने आप आ कर गिर जाती हैं।...वही पतंगें मैं जमा कर लेता हूँ। तभी इनमें से कुछ पतंगें बहुत खराब हो रही हैं पर तूने उनकों भी संभाल कर क्यों रखा हुआ है ?

फिर इनका क्या करूँ माँ ? पतंग के दिनों में बहुत से गरीब बच्चे अपनी जान की परवाह न करते हुए पतंग लूटने के लिए सड़कों पर भागते फिरते हैं, यह पतंगें उन को दी जा सकती हैं। हाँ माँ आपकी सलाह तो अच्छी है पर पतंगें देख कर उन्हें सहेज कर रखने या खुद ही उड़ाने का लालच आ जाता है।

चित्र साभार www.lovepik.com

एक दिन वरूण दोस्तों के साथ क्रिकेट खेल कर लौटा था, उसकी नजर अपने बगीचे में गई। उसने देखा कि बगीचे में एक लड़का घुसा हुआ था और उसने हाथ में एक लोहे की छड़ उठा रखी थी, उस से पतंग निकालने की

वह कोशिश कर रहा था। वरूण एक दम से चिल्लाया—— अरे यह क्या कर रहे हो ?

लड़के ने डर के मारे लोहे की छड़ वहीं फेंक दी और रोने लगा – भैया मैं चोर नहीं हूँ। अभी एक पतंग कट कर यहाँ लटक गई थी, उसको निकालने की कोशिश कर रहा था। तुम डरो नहीं मैं तुम्हें चोर नहीं समझ रहा पर क्या तुम्हें मालुम है कि पेड़ के पास से करंट के तार जा रहे हैं... पतंग निकालने के चक्कर में यदि यह छड़ तारों से छू गई तो तुम अभी यहीं करंट लगने से मर जाओगे। दो चार रुपए की पतंग के लिए तुम अपनी जान खतरे में क्यों डाल रहे हो ? हाँ भैया गलती हो गई ...मैं ने यह तो सोचा ही नहीं था पर मैं अभी मरना नहीं चाहता। मेरे छोटे भाई को पोलियो है, आज वह पतंग के लिए जिद्द कर रहा था ...मैं ने सोचा उसके लिए पतंग ले जाऊँगा तो वह खुश हो जाएगा।

तुम्हारे घर में कौन कौन है ? माँ है, बापू हैं, एक छोटा भाई है। माँ दो घरों का खाना बनाती है...बापू केले का ठेला लगाते हैं। तुम स्कूल जाते हो ? हाँ, पास के सरकारी स्कूल में चौथी कक्षा में पढ़ता हूँ। पहले मैं खाली समय में एक दुकान में काम भी करता था पर जब से सरकार ने बच्चों से काम कराने पर रोक लगाई है तब से मेरी नौकरी चली गई है।.. फिर भी चुपके से दो घरों में कार साफ करने का काम अभी भी कर रहा हूँ। ठीक है मैं पापा से बात करता हूँ, हमारी कार गैराज में रहती हैं किसी को पता भी नहीं चलेगा कि उसकी सफाई कौन करता है। तुम एक दो दिन बाद आना।

भैया आप तो बहुत अच्छे हो, अब मैं चलूँ.... दो दिन बाद आऊँगा। तुम्हारा नाम क्या है ? ''शंकर''।

वरुण को अचानक मम्मी की एक बात याद आ गई। उसने कहा—— शंकर तुम दो मिनट यहीं रुको, मैं अभी आता हूँ।

वरूण ने अन्दर से पाँच छह पतंगे और डोर लाकर उसे देते हुए कहा —— लो यह अपने भाई को दे देना पर उस से कहना वह इन्हें सड़क पर नहीं, किसी सुरक्षित जगह से उड़ाए। पतंगें पाकर शंकर के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई। खिड़की में से मम्मी यह सब देख कर बहुत खुश हो रही थीं।

पता– महादेवपुरा, बैंगलौर

संघर्ष की कहानी

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

दस वर्षीया रीना और दिया दोनों बहुत अच्छी दोस्त थीं। वे एक ही मोहल्ले में रहती और एक ही स्कूल में पढ़ती थीं। उनकी

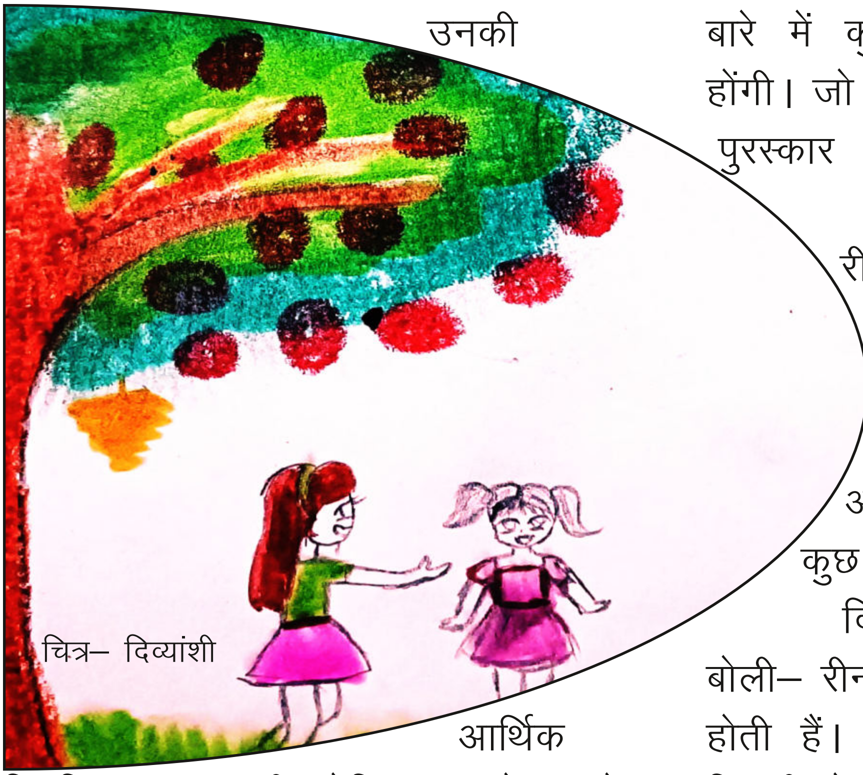

चित्र– दिव्यांशी

आर्थिक स्थिति सामान्य थी लेकिन उनके सपने बड़े और हौसले बुलंद थे। रीना की मम्मी आंगनबाड़ी में काम करती थी और दिया की मम्मी सिलाई का काम करके गृहस्थी चलाते थे। एक दिन स्कूल में मैडम बोली – बच्चों अगले हफ्ते अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस है। इस अवसर पर हम एक विशेष कार्यक्रम करेंगे जिसमें आपको अपनी मम्मी और परिवार की अन्य महिलाओं के बारे में कुछ खास बातें साझा करनी होंगी। जो सबसे अच्छी प्रस्तुति देगा उसे पुरस्कार मिलेगा।

छुट्टी के बाद इस बारे में रीना और दिया रास्ते में बातें करने लगीं। दिया बोली– रीना हमारे पास बताने को कुछ भी खास नहीं है। न तो अच्छे उदाहरण हैं और न ही कुछ और।

दिया ने उसका हाथ पकड़ा और बोली– रीना खास बातें उदाहरणों से नहीं होती हैं। हमारी मम्मी परिवार के लिए कितनी मेहनत करती हैं। क्या वह खास नहीं है ? तुम्हारी बात सही है। लेकिन हम किस तरह से यह सब कार्यक्रम में पेश करेंगे ?

सोचते हैं। आज घर जाकर मम्मी से पूछेंगे कि उन्होंने अब तक अपने

जीवन में कौन–कौन सी मुश्किलें झेली हैं और कैसे उनका सामना किया है। दिया ने हंसते हुए कहा।

शाम को रीना ने मम्मी से पूछा– मम्मी जब आप छोटी थीं तो आपको कौन सी मुश्किल झेलनी पड़ी थी ? मीरा ने एक पल के लिए सोचा और फिर मुस्कुराते हुए बोलीं– बहुत सारी मुश्किलें आई थीं । बचपन में पढ़ाई के लिए मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा था।

यह चित्र www.freepik.com से लिया गया है।

फिर आपने क्या किया ? रीना ने उत्सुकता से पूछा। मैंने हार नहीं मानी। रात को दीए की रोशनी में पढ़ाई की। कई बार भूखे पेट भी रहना पड़ा लेकिन मुझे हर हालत में पढ़ाई करनी थी। मैंने अपनी मेहनत जारी रखी। आज उसी की बदौलत मैं आंगनबाड़ी केंद्र पर काम कर रही हूं। मीरा की आंखों में गर्व झलक रहा था।

उधर दिया ने भी मम्मी से बात की। रीता सिलाई का काम करती थी। उन्होंने बताया– जब मैं छोटी थी तब बाबूजी के पास इतने रुपए नहीं थे कि वे मुझे स्कूल भेज सकें। मैंने अपनी मां से थोड़ा बहुत पढ़ना लिखना सीखा और साथ ही सिलाई भी सीखी। अपने सपनों को पूरा करने के लिए मैंने बहुत मेहनत की और आज मैं कपड़े सिलने में एक्सपर्ट हो गई हूं।

अगले दिन दोनों सहेलियां ने स्कूल आकर अपनी मम्मी की कहानी एक–दूसरे को सुनाईं। रीना ने कहा– मुझे लगता है हमारी मम्मी असली हीरोइन हैं। हमें इनके बारे में ऐसा कुछ करके दिखाना होगा कि सबको समझ आए कि संघर्ष करने वाली महिलाएं सबके लिए प्रेरणा श्रोत होती हैं।

दिया ने उत्साह से कहा– हम एक नाटक तैयार करेंगे जिसमें हम दिखाएंगे कि हमारी मम्मी किस तरह से मुश्किलों का सामना करके आज इस मुकाम पर पहुंची हैं।

एक हफ्ते तक दोनों ने सहपाठियों के साथ मिलकर नाटक तैयार किया। उन्होंने नाटक में गांव का एक दृश्य दिखाया जहां लड़कियां अपना लक्ष्य पाने के लिए संघर्ष कर रही थीं। दिया ने अपनी मम्मी रीता का किरदार निभाया और दिखाया कि कैसे उन्होंने सिलाई

सीखकर परिवार को संभाला। रीना ने अपनी मम्मी मीरा का रोल किया जिसमें उन्होंने बताया कि उन्होंने भूखे रहकर और संसाधनों के अभाव में अपनी पढ़ाई जारी रखी।

कार्यक्रम के दिन स्कूल में बच्चों और अभिभावकों की भीड़ लगी हुई थी।

चित्र – रोहन शर्मा

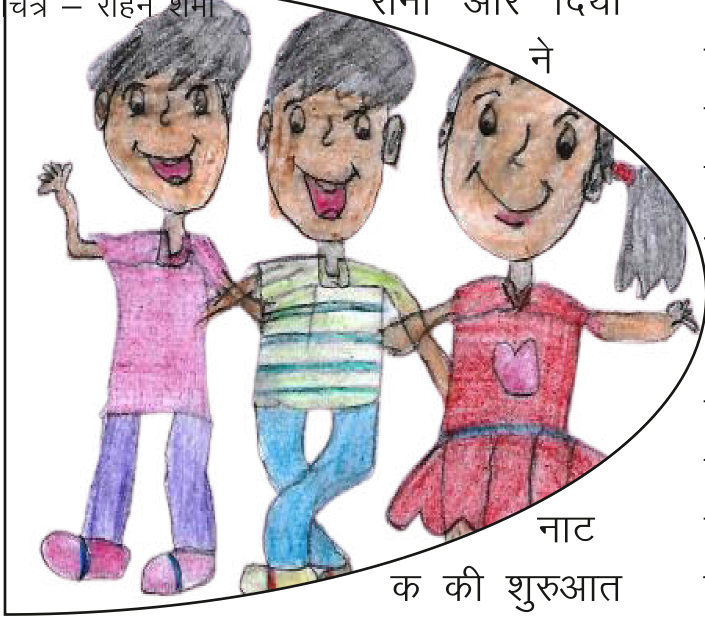

रीना और दिया ने नाटक की शुरुआत बड़े प्रभावशाली ढंग से की। जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ रही थी दर्शकों की आंखे सजल होने लगीं। उनकी प्रस्तुति में सच्चाई थी जो हर किसी के दिल को छू रही थी। कार्यक्रम के समापन पर मैडम मंच पर आईं। उन्होंने कहा– रीना और दिया तुम सबने बहुत ही सुंदर ढंग से महिलाओं के संघर्ष की सच्चाई पेश की। आज तुमने नाटक के माध्यम से हमें बताया कि असली हीरोइन वही होती हैं जो कठिन परिस्थितियों का सामना कर अपनी राह खुद बनातीं हैं और दूसरों के लिए भी उदाहरण पेश करती हैं। दोनों सहेलियां साथी कलाकारों के साथ मंच पर खड़ी थीं। उनकी आंखों में विशेष चमक थी जो इस बात का संकेत था कि उनके दिल में अब नया विश्वास था।

कार्यक्रम स्थल पर तालियों की गड़गड़ाहट गूंज रही थी। रीना और दिया ने एक–दूसरे की ओर देखा और मन ही मन यह संकल्प किया कि वे कभी भी हालातों से हार नहीं मानेंगी। और अपनी मंजिल पाने के लिए संघर्ष करेंगी।

मैडम ने उनकी टीम को पुरस्कृत किया और उन सबके प्रयास की सराहना की। यह सब देखकर मीरा और रीता दोनों बहुत खुश थी आज पहली बार उन्हें एहसास हुआ की उनकी मेहनत सफल रही। उन्होंने जीवन में कुछ हासिल करने के लिए जो कुछ किया वह उनके लिए उस समय की परिस्थितियों के हिसाब से अनुकरणीय था। देखा रीना मैंने कहा था हमारी मम्मी ही असली हीरोइन हैं। हमें उन पर गर्व है। रीना ने उसकी बात पर सहमति में सिर हिलाया और मुस्कुराते हुए बोली– ठीक कहा। हम भी अपने जीवन में उनकी तरह संघर्षशील और निडर बनेंगे।

पता – ओंकार रोड, यू.के.।

मुबारक हो नया साल

कृष्ण कुमार अजनबी

चित्र – अदिति

मुबारक हो सबको नया साल साथियो।
जीवन हो सबका खुशहाल साथियो।।

गुलशन में कलियाँ खिले न कि काँटे।
फूलों से लदे हरेक हरी डाल साथियो।।

खुशबू से महके अरमानों का गुलिस्तां।
कामयाबी कदम चूमे हो निहाल साथियो।।

हँसते हँसते कटे यूँ जिंदगी के लम्हे।
किसी के दिल में न हो मलाल साथियो।।

मेरी तमन्ना है पूरी मुराद हो सबकी।
यही पैगाम परोसे यह साल साथियो।।

तूफान से यूँ डरें नहीं करें मुकाबला।
हौसला हो तो है किसकी मजाल साथियो।।

दुनिया में कोई दुखी न हो सुख से रहें।
'जीएं जीने दें' हो सबका खयाल साथियो।।

ऐसा कुछ कर दिखाएँ जिंदगी में हम।
जिसे कहें लोग अजनबी मिसाल साथियो।।

पता– देवभोग, छत्तीसगढ़।

पपीता

नेतलाल यादव

चित्र साभार www.freepik.com

फलों में खास है
विटामिन इसके पास है
फल जल्दी आता है
भूख और शक्ति बढ़ाता है
जो प्रतिदिन खाता है
मोटापा उसका घटाता है
करिक पपया
इसका वैज्ञानिक नाम है
उदर विकार दूर करना
इसका जबरदस्त काम है

आजकल लोग नहीं खाते हैं
रंगी सब्जियाँ लाते हैं
थैले में भरकर बीमारियाँ
घर तक आतीं हैं
जबकि पपीता से कई
औषधियाँ बनाई जातीं हैं !!

पता – गिरिडीह झारखंड

गुलाबी सर्दी

माणकचंद सुथार

गेंदा खिला
गुलदाउदी मुस्करायी,
सुरभि गुलाब की
चहुंओर है छायी।
रंगों की टोली
पेटुनिया संग आयी,
शोभा सप्तरंगी
बगिया में सज आयी।
कुनकुनी धूप
मनको भाये,
भंवरे इठलाये
गुनगुन गीत गाये।
सूरज नभ पर
देर से आये
नहीं चिलचिलाते
बस, मंद–मंद मुस्काये।
अलमारी से स्वेटर
टोपी बाहर आयी
मेरे घर बस्ती शहर में
गुलाबी सर्दी आयी।

चित्र – दिव्यांशी

पता – सी–179 मुरलीधर
व्यास नगर, बीकानेर

चिड़ियाघर में शीत लहर

डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

शीत लहर से बचने के लिए,
लगा हीटर जानवरों के लिए।
ठंड ने बढ़ाया ताम–झाम,
खाते तोते अखरोट–बादाम।
हिरण, चिंकारा गुड़ खाते,
इस तरह ठंड को भगाते।
ठंड की हो गई अब इतनी हद,
कि खाते भालू अंडे और शहद।

चित्र साभार www.pinterest.com

पता –43, देशबंधु सोसाइटी, दिल्ली

शिशु गीत

गोविन्द भारद्वाज

किताबें

जीवन की सचमुच आधार किताबें,
नये ज्ञान की ये भण्डार किताबें।
लाल–हरी हो चाहे नीली–पीली,
छोटी बड़ी लिए आकार किताबें।

चित्र – प्रिया ओझा

पुस्तक

रंग–बिरंगी न्यारी पुस्तक,
लगती हमको प्यारी पुस्तक।
ज्ञान का अद्‌भुत है खजाना,
दुनिया भर की सारी पुस्तक।

पोथी

पहली–दूजी, तीजी–चौथी,
बात न अपनी कोई थोथी।
रोज पढ़ें हम बात ज्ञान की,
लेकर अपनी सुंदर पोथी।

पढ़ो किताबें

नित नयी रोज पढ़ो किताबें,
लेकर आगे बढ़ो किताबें।
काम तुम्हारे ये आएँगी,
लेकर सीढ़ी चढ़ो किताबें।

पता – अजमेर राजस्थान

बगुला भगत...

पुरूषोत्तम व्यास

बगुले ने कहाँ मछलियों से
मुझसे कोई प्रेम
नही करता..
इस पर माला जपता हूँ

तुम्हारी उम्र लम्बी हो
यही हरि से कहाँ करता हूँ

चित्र साभार www.podtail.com

दादाजी की दाढ़ी

दादाजी की दाढ़ी में
चींटी बैठी
कोई मुझे समझाएं
दादाजी की दाढ़ी
शक्कर से मीठी...

पता – अमरावती, महाराष्ट्र

तारा

प्रज्ञा मिश्रा

"मां, आज के बाद मैं स्कूल नहीं जाऊंगी" अपना बस्ता मां को पकड़ा कर रोते हुए तारा ने कहा । मां ने पूछा क्या हुआ तो सुबकते हुए वह बोली," तुमने क्यों मेरा नाम तारा रखा है मां ?" सब बच्चे कक्षा में घुसते ही मुझे चिढ़ाने लगते हैं.. कोई कहता..... तारा..... मारा..... पारा !! कोई कहता...... देखो देखो आई तारा, इसको तो बंदर ने मारा, छीन लिया खिलौना सारा..!!

चित्र – लक्षिता

मां बोली, अच्छा चलो कुछ खा पी लो, थोड़ा आराम करो फिर शाम होने पर हम बगीचे में चलेंगे देखने कि तुम्हारे लगाए पौधों में फूल आए कि नहीं । बगीचे से वापिस आकर तारा खुश थी, उसने अपना बस्ता सही किया रोज की तरह पढ़ाई की, होम वर्क किया और खा पी कर पापा को बगीचे के फूलों के बारे में बताते–बताते सो गई। अगली सुबह वो चहकते हुए स्कूल गई। हर दिन की तरह आज भी कक्षा में जाते ही सब बच्चों ने एक सुर में चिढ़ाना शुरू किया..... देखो.....देखो......आई तारा....!!

पर आज तो तारा बस खड़ी मुस्कुरा रही थी। तारा को चिढ़ता न देख, बच्चे धीरे धीरे कर के चुप हो गए

और एक दूसरे का मुंह देखने लग गए मानो आपस में ही पूछ रहे हों ये चिढ़ क्यों नहीं रही और तभी बोलना शुरू किया तारा ने —

"हां, मैं हूं तारा, जैसे आसमान में भी तो लाखों तारे हैं जिसमें से एक तारा तो हमारा सूरज ही है। जो हमें दिन भर धूप देता है। सोचो कि३सूरज न हो तो क्या हो, पृथ्वी पर हमेशा अंधेरा रहे, हम तुम स्कूल न आ पाएं और तो और हम—तुम, पेड़—पौधे, जीव—जंतु सब मर जाएं।

तो सोचो..... कितना जरूरी होता है एक तारा। रात को भी कितने सारे तारे टिमटिम करते हुए आसमान में चमकते हुए दिखते हैं हमें । मैं भी चमकूंगी एक दिन खूब पढ़ाई कर के, देखना तुम सब मैं बड़ी वैज्ञानिक बनूंगी और पता करूंगी तारों की दुनिया के बारे में ३रौशन करूंगी अपने मां पापा और स्कूल का नाम..... !"

खिड़की से अध्यापिका सब सुन रही थी, उन्होंने अंदर आकर तारा को खूब शाबाशी दी और सभी बच्चों ने ताली बजाई तारा के लिए। अब अध्यापिका ने सभी बच्चों से कहा कल से तुम सब भी अपने नाम से जुड़ी रोचक जानकारियां बताओगे बारी बारी से कक्षा में।

चित्र — राम भादानी

आज तारा ने घर पहुंचकर मां को गले लगा लिया और बोली अब से कोई मुझे नहीं चिढ़ाएगा मां !

तुमने मुझे जो कुछ भी बगीचे में बताया था तारे के बारे में, मैने वो सब पूरी कक्षा को बता दिया और अब से सारे बच्चों को ऐसे ही अपने नाम के बारे में कक्षा में हर दिन बताना है । हमें खूब सारी नई—नई और रोचक जानकारियां मिलने वाली है । चलिए मां, पौधों को पानी देकर आते हैं और आज क्या बताओगी नया मुझे३ यूं ही कहते हुए चिड़िया सी फुदकते तारा मां का हाथ थामे बगीचे में चली गई ।

पता –सैनिक नगर, रायबरेली रोड, लखनऊ (उ.प्र.)

बाल पहेलियां

गौरीशंकर वैश्य

1

दौड़ूँ धातु के तारों में।
दूँ प्रकाश अँधियारों में।
बड़े–बड़े करती हूँ काम।
शीघ्र बताओ मेरा नाम।

2

रात को नभ में करूं
धमाल।
हँसिया कभी, कभी फुटबाल।
बादल सम्मुख चले न ड्रामा।
कहलाता हूँ सबका
मामा।

उत्तर

1 बिजली
2 चंद्रमा
3 कुर्सी
4 इन्द्रधनुष
5 नीम

3

कई मेरे आकार–प्रकार।
पाँव मेरे होते हैं चार।
जो भी बैठे, वह इतराये।
भला–सभ्य नागरिक कहाये।

4

नभ में एक धनुष बनता है
जिसके रंग हैं पूरे सात।
नहीं हाथ में आ सकता हूँ
दिखता, जब होती बरसात।

5

खाओगे तो स्वाद है
कड़ुवा
कहलाता हूँ बड़ा हकीम।
सबको शीतल छाया देता
चिड़ियां करती प्यार
असीम।

पता –117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ

बच्चों का कोना

प्रेयस, जयपुर

युवाक्षी बिन्नानी, मुम्बई

स्तुति बिस्सा, बीकानेर

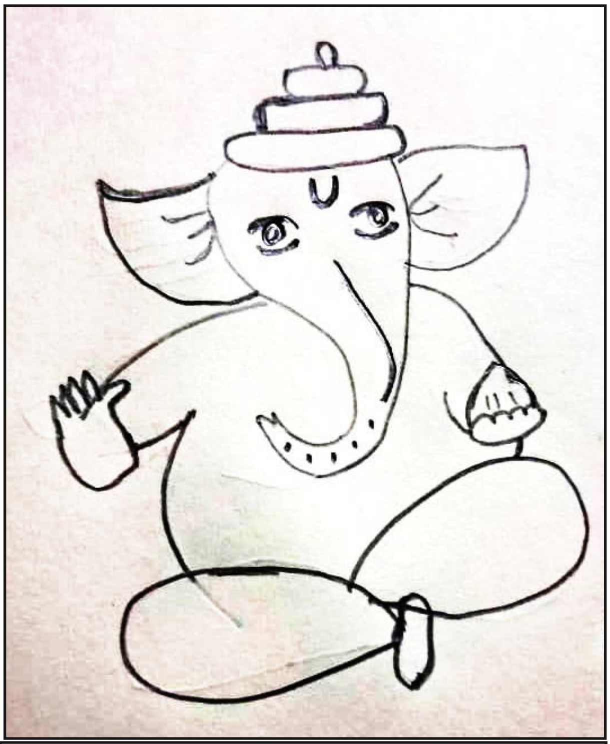

आकार्षा गुप्ता, दिल्ली

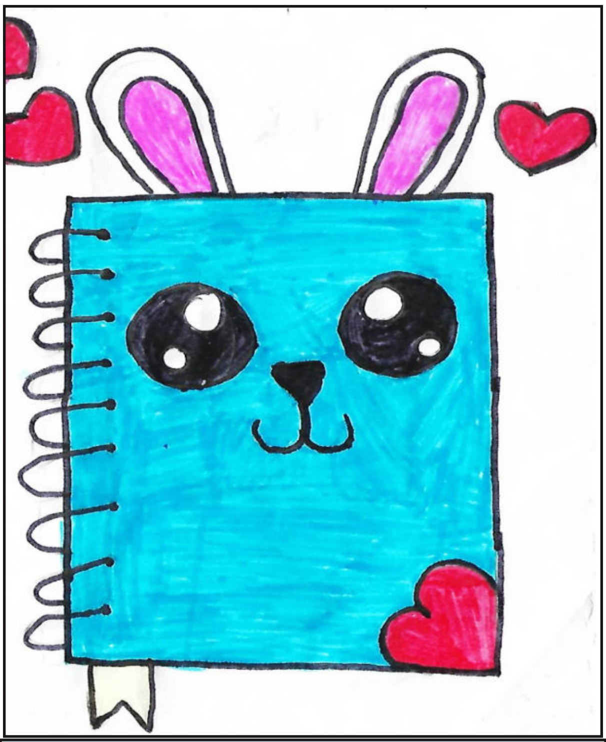

वसु रील, बीकानेर

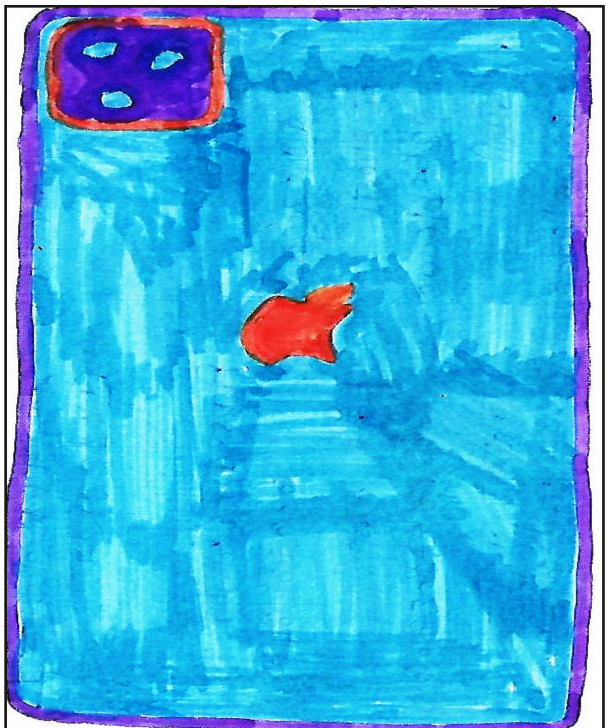

हर्षित सोलंकी

सीबा, बीकानेर

शहजादी, बीकानेर

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

मनोरंजक चित्र पहेलियां

★ चाँद मोहम्मद घोसी

सही मार्ग से भूखे चूहे को लड्डू के थाल तक पहुँचाओ.

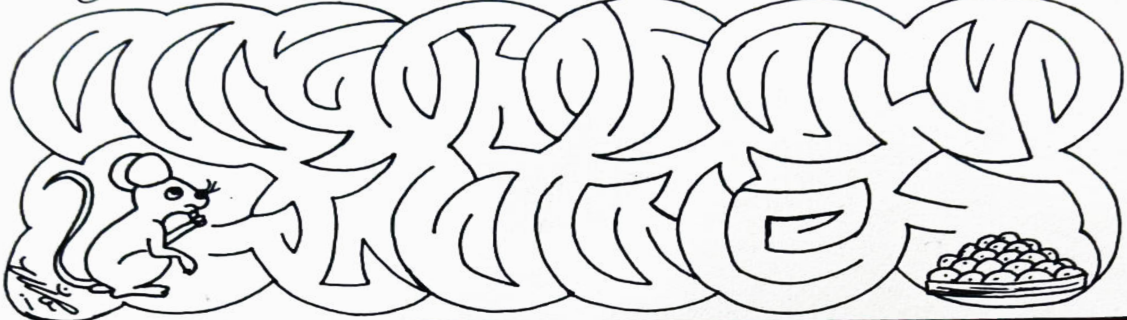

इनमें बिल्कुल एक जैसे दो जुड़वां हाथी कौनसे नम्बर के हैं?

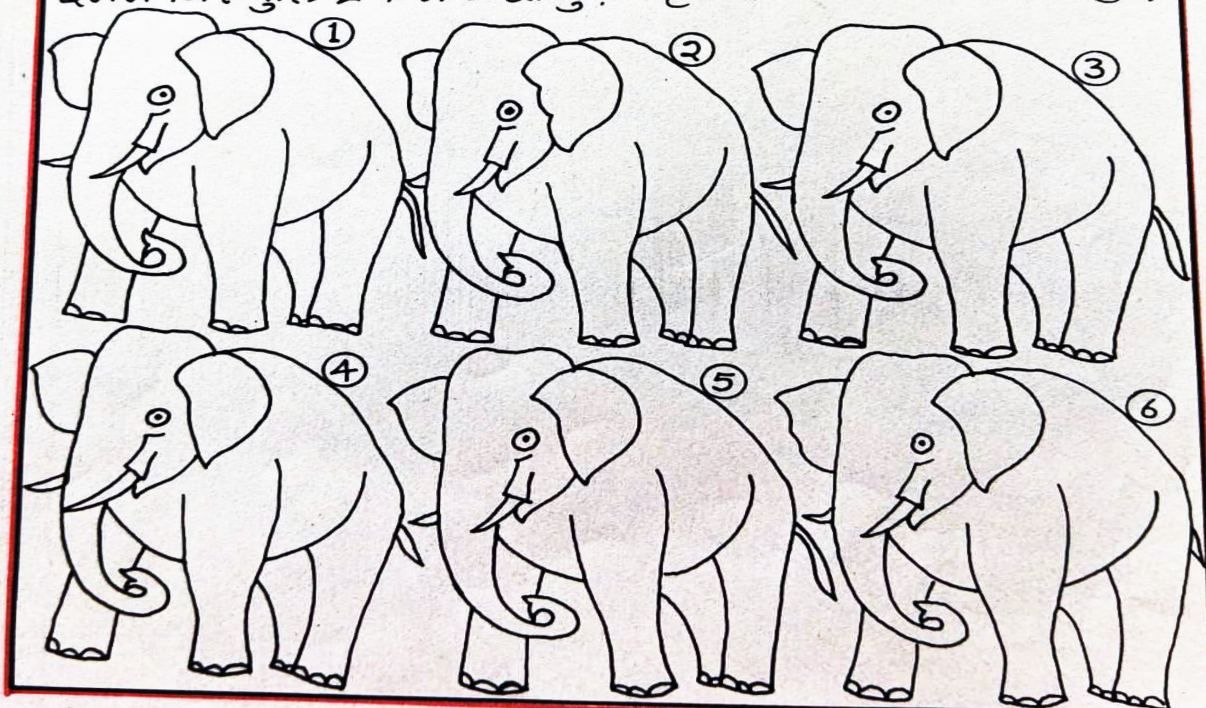

उत्तर :- नम्बर 3 और नम्बर 5 के हाथी बिल्कुल एक जैसे हैं.

दुनिया के देश

संजय पुरोहित

एस्टोनिया

हेलो फ्रेण्ड्स। कैसे हैं आप ? हमेशा की तरह चुस्त–दुरूस्त और एनर्जेटिक हो ना ! वेरी गुड। दुनिया के देशों की सैर में आज हम आपको लिये चलते हैं एक ऐसे देश जो आकार में तो बहुत छोटा सा ही है लेकिन इसकी खासियतें कमाल की है। हम बात कर रहे हैं एस्टोनिया की। एस्टोनिया रिपब्लिक नॉर्थ यूरोप के बाल्टिक रीजन में स्थित एक देश है। इसके बॉर्डर नॉर्थ में फिनलैण्ड की खाड़ी, वेस्ट में बाल्टिक सागर, साऊथ में लातविया और ईस्ट में रूस से मिलती है। एस्टोनिया के लोगों को एस्तोनियाई कहते हैं। ये बाल्टिक फिन्स के वंशज हैं। फिनिश भाषा और एस्तोनियन भाषा में बहुत सी समानताएं भी देखने में आती है। एस्टोनिया नाम रोमन इतिहासकार टेसीटस का दिया हुआ माना जाता है। उन्होंने अपनी किताब 'जरमेनिया' में एस्टोनियाई व्यक्ति को 'एसिटी' कहकर संबोधित किया था। एस्टोनिया एक डेमोक्रेटिक यानी लोकतांत्रिक संसदीय रिपब्लिक देश है। यह पन्द्रह काउन्टियों में बांटा गया है। एस्टोनिया की राजधानी तालिन्न है। तालिन्न की बात आई है तो यह भी बताते चलें कि तालिन्न में आवागमन के समस्त साधन पूरी तरह फ्री हैं। यही एस्टोनिया का सबसे बड़ा शहर भी है। एस्टोनिया की जनसंख्या केवल डेढ़ करोड़ है। इसका आकार केवल 46 हजार स्क्वायर किलोमीटर है। यह यूरोपियन संघ का सबसे कम आबादी वाला सदस्य देश है। एस्टोनिया 1921 से लीग ऑफ नेशन्स, 1991 से संयुक्त राष्ट्र और 2004 के बाद

चित्र साभार –www.nordicexperience.com

से यूरोपीय संघ तथा नाटो का सदस्य है।

दूसरे देशों और एस्टोनिया में भला क्या अंतर है ? यही प्रश्न आप भी सोच रहे होंगे। तो इसका जवाब यह है कि एस्टोनिया का समाज दुनिया का पहला डिजिटल समाज है। यह देश ई–गवर्नेंस में दुनिया में टॉपर है। एस्टोनिया की निन्यानबे प्रतिशत सरकारी सेवाएं ऑनलाईन उपलब्ध है। एस्टोनिया ऑनलाईन राजनीति वोटिंग प्रोसेस अपनाने वाला दुनिया का पहला देश भी है। यहां का लगभग सभी काम ऑनलाईन ही होता है। यहां का सिस्टम इतना ऑनलाईन है कि यदि आप एस्टोनिया के नागरिक बनना चाहते हैं तो एस्टोनिया के ई–रेजीडेंसी प्रोग्राम के तहत यह भी संभव है। यहां तक कि आप ऑनलाईन ही आप एस्टोनिया में कम्पनी स्थापित करने के लिये भी आवेदन कर सकते हैं। एस्टोनिया के बारे में दुनिया में अधिक बातें नहीं होती।

चित्र साभार –estonia-paradise-of-the-north.blogspot.com

यह देश प्राकृतिक आश्चर्यों, ऐतिहासिक स्थलों और जादू से भरी प्रकृति से भरा हुआ है। सर्दियों में एस्टोनिया का तापमान गिर कर माईनस छह से लेकर माईनस पेंतालिस डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है। इस देश के मैदान तो चट्टानी है लेकिन ऊपरी हिस्सा बर्फ से ढका रहता है। जनवरी से फरवरी तक यहां भारी बर्फबारी होती है। यहां तक कि इस दौरान इसके आसपास के समुद्री इलाके भी जम जाते हैं। एस्टोनिया के एक चौथाई भाग संरक्षित भाग हैं। यही कारण है कि एस्टोनिया की हवा को दुनिया में चौथी सबसे स्वच्छ हवा वाला देश भी माना जाता है। एस्टोनिया में सघन वन हैं। एस्टोनिया का वन्य जीव भी संरक्षित और विविधता वाला है। लगभग पैंसठ प्रकार के स्तनपायी जिन्हे मैमल्स कहते हैं, यहां पाए जाते हैं। यहां लीनेक्स, लोमड़ी, खरगोश, हिरण और भूरे भालू, जंगली बकरी खूब पाये जाते हैं। प्रकृति के कई प्रतीक एस्टोनिया में नजर आते हैं। इनमें से एक है कॉर्नफ्लॉवर। एस्टोनिया के झण्डे के रंग में भी काले और सफेद के साथ 'कॉर्नफ्लॉवर ब्ल्यू' भी नज़र आता है। एस्टोनियाई भाषा दुनिया की सबसे छोटी भाषा मानी जाती है। साथ ही यह दुनिया की सबसे कठिन भाषा भी मानी

जाती है। एस्टोनिया में दो हजार से ज्यादा द्वीप हैं। एस्टोनिया में दो यूनेस्को संरक्षित क्षेत्र हैं। इसमें से एक तालिन्न स्थित 'ओल्ड टाउन' है। यह हैन्सियाटिक विरासत को प्रदर्शित करने वाला टाउन तेरहवीं शताब्दी में बना था।

एस्टोनिया को यूरोप का सबसे ज्यादा हरा भरा देश माना जाता है। यहां 221 आदिवासी समूह हैं और 243 स्थानीय बोलियां हैं। शिक्षा के क्षेत्र में एस्टोनिया पूरे यूरोप में नम्बर एक पर आता है। क्या आपको मालूम है कि भ्रूणविज्ञान यानी एम्ब्रीयोलॉजी की शुरूआत एस्टोनिया में हुई थी। विज्ञान और टेक्नालॉजी के टॉपर एस्टोनियाई लोगों के पास केवल यही नहीं बल्कि लोक गीतों का दुनिया का सबसे बड़ा संग्रह है। सोवियत कब्जे के दौरान उन्होंने अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने के लिये अपने लोक गीतों को स्वतंत्रता के हथियार के रूप में इस्तेमाल किया। लगभग तीन लाख लोगों ने 1986 से 1991 तक देशभक्ति के गीत गाने के लिये एकत्रित होकर आन्दोलन चलाया जिसे 'सिंगिंग रेवोल्यूशन' कहा गया। आखिरकार 1991 में एस्टोनिया को अपनी स्वतंत्रता हासिल हुई। यदि एस्टोनिया के खानपान की बात करें तो पारम्परिक रूप से सीजनल रूप से प्राप्त ताजा जामुन, जड़ी–बूटियों और समुद्री भोजन यानी सी–फूड का काफी प्रचलन है। इसके साथ ही ब्लैक ब्रेड, पोर्क और आलू एस्टोनिया के क्लासिकल पॉप्यूलर खाद्य है। गर्मियों के दौरान अक्सर बाहर ग्रिल करना शामिल होता है। यहां की मिठाई 'विसालकुक्कैल' भी प्रसिद्ध है। यह मिठाई क्रिसमस से ईस्टर तक खायी जाती है। इसके अलावा एस्टोनियाई लोक जैम, प्रिजर्व और अचार के शौकीन होते हैं। आपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म स्काईप का नाम तो जरूर सुना होगा। स्काईप की शुरूआत एस्टोनिया में ही हुई थी। एस्टोनिया की मुद्रा पहले क्रून थी, इसके साथ ही रूसी रूबल भी प्रचलन में था। बाद में यूरो मुद्रा को अपनाया गया। एस्टोनिया के क्रिसमस मार्केट दुनिया भर में विख्यात हैं। दुनिया का पहला क्रिसमस ट्री भी एस्टोनिया में ही बनाया गया था। यहां के लोक हंसमुख और अपनी संस्कृति, भाषा के प्रति समर्पित हैं साथ ही दुनिया में सबसे ज्यादा डिजिटल व्यवस्था के जानकार हैं। तो कैसी लगी एक छोटे से किंतु बहुत सुंदर और डिजिटल दुनिया के सिरमौर देश की यात्रा ? अगले अंक में चलेंगे किसी ओर देश की यात्रा को। तब तक के लिये संजय अंकल की ओर से बाय–बाय।

पता –समीप सूरसागर, बीकानेर

गणतंत्र दिवस

सुरेश चन्द्र 'सर्वहारा'

चित्र– धनंजय जोशी

विजय पर्व गणतंत्र दिवस है
नव भारत की नव पहचान,
कोटि कोटि जनता ने पाया
अपना निर्मित नया विधान।
हुए सभी हम भारतवासी
अपनी किस्मत के निर्माता,
अंग्रेजी काले नियमों से
मुक्त हो गई भारतमाता।
बिना भेद के पाई सबने
एक अनोखी अवसर–समता,
जनता ने पहचानी फिर से
विश्व–पटल पर अपनी क्षमता।
लहर–लहर कर नीलगगन में
लगा फहरने भारत का ध्वज,
एक राष्ट्र में बँधकर महकी
संप्रभुता से गर्वोन्नत रज।
जनता को सर्वोच्च समझकर
लोकतंत्र हमने अपनाया,
धर्मों से निरपेक्ष रहे हम
राष्ट्रगान को मिलकर गाया।
वीर शहीदों की कुर्बानी
व्यर्थ नहीं जाने पाएगी,
देशप्रेम की भीनी खुशबू
जन गण मन को महकाएगी।
हो सद्भाव सभी के मन में
कहीं न हो आतंकी दंगा,
अमर रहे गणतंत्र हमारा
रहे फहरता सदा तिरंगा।

पता– 3 फ 22 विज्ञान नगर,
कोटा

नववर्ष एवं गणतंत्र दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
अजित फाउण्डेशन

चींटी रानी

प्रिया देवांगन 'प्रियू'

चित्र – सुभाष खत्री

कॉप रही थी चींटी रानी।
ठंडा मौसम ठंडा पानी।।
दिखे नहीं ये सूरज दादा।
भूल गए क्या कर के वादा।।

कभी ज़रा अंबर को ताके।
सितम किया सर्दी ने आ के।।
चींटी फिर चींटा से बोली।
धीरे से अपना मुँह खोली।।

स्वेटर टोपी नहीं रजाई।
सर सर चलती है पुरवाई।।
होती है मुझको कठिनाई।
सर्दी का मौसम दुखदाई।।

चींटा को भी फ़िक्र सताई।
तब उसने तरकीब लगाई।।
पत्ती से कनटोप बनाया।
अपनी चींटी को पहनाया।।

देख चेहरा वह शरमाई।
चींटा को फिर गले लगाई।।
लगी नाचने चींटी रानी।
सुनो सुनाए 'प्रियू' कहानी।।

पता – गरियाबंद, छत्तीसगढ़

पतंग

राजेश पाठक

चित्र साभार www.youtube.com

नया साल है नयी उमंगें
चलो उड़ाएँ आज पतंगें

देखो कितनी दूर उड़ा वो
आसमान से लगे जुड़ा वो

जुड़कर उनसे बातें करता
ऊपर जाने में ना डरता

हवा संग बादल भी संग है
सबका अब नीला सा रंग है

इधर फिरे औ उधर फिरे वो
कभी न नीचे मगर गिरे वो

उतरे तो पूछूँगा उससे
बात हुई तेरी किस–किससे,,

पता – गिरिडीह, झारखंड

अमरूद

टीकेश्वर सिन्हा

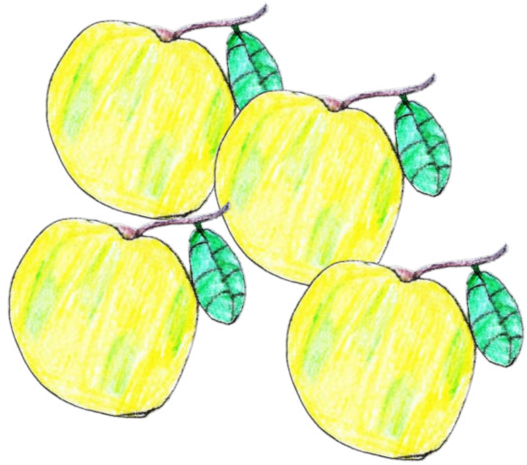

चित्र – निकुंज स्वामी

फलों में मशहूर अमरूद।
स्वाद से भरपूर अमरूद।
कच्चा हरा पक्का पीला।
होता है यह बड़ा रसीला।
दिखता सुंदर गोल गोल।
लगता आकर्षक अनमोल।
इसमें खनिज जल प्रोटीन।
कार्बोहाइड्रेट और विटामिन।
मिटती इससे फौरन भूख।
मिलता इससे पाचन सुख।
औषधि युक्त न्यारा फल।
हम बच्चों का प्यारा फल।

पता – घोटिया-बालोद, छत्तीसगढ़

बूझो तो जानें

डॉ राकेश चक्र

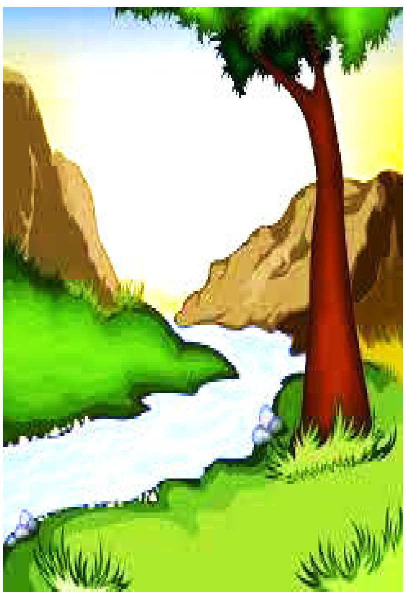

चित्र साभार www.stock.adobe.com

देवनदी वह कौन है बच्चो
जिसको माँ कहते हैं।
मंदाकिनी भी कहें उसे हम
जीव अनेकों रहते हैं।

अमरतरंगिनी, भागीरथी है
जिसका जल अमृत कहलाता।
देवपगा स्नान जो करते
उनका मन पावन हो जाता।

स्वर्गापगा, जाह्नवी कहते
जिसे भगीरथ धरा पर लाए।
सुरसरिता कहे जिसे हम
पूर्वज जिसमें तर जाएँ।

वनंदा है वही विक्षुपगा
वही पूज्य है नदीश्वरी।
सत्य, सनातन वही संस्कृति
वही है बच्चो सुरसरि।

सुरधुनि है भारत की माता
गंदा इसको कभी न करना।
पाप जो लेते अपने सिर पर
उनको दंड पड़ेगा भरना।

उत्तर– माँ गंगा नदी।

पता – 90 बी, शिवपुरी, मुरादाबाद

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों नव वर्ष की शुभकामनाएं ! प्रति माह की तरह इस माह जनवरी के खगोल घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करते है। यह आसमान विचित्रताओं से भरा हैं, आइए जानते है इस माह की खगोलिय घटनाओं के बारे में। दिनांक 3–4 जनवरी 2025 को चतुर्भुज उल्का बौछार को देख सकते है।

क्वाड्रंटिड्स औसत से ऊपर की बारिश है, जिसके चरम पर प्रति घंटे 40 उल्काएं होती हैं। ऐसा माना जाता है कि इसका निर्माण 2003 ईएच1 नामक विलुप्त धूमकेतु द्वारा छोड़े गए धूल के कणों से

चित्र साभार www.indiatoday.in

हुआ है, जिसे 2003 में खोजा गया था। यह शॉवर प्रतिवर्ष 1–5 जनवरी तक चलता है। इस वर्ष यह 3 तारीख की रात और 4 तारीख की सुबह को चरम पर है। अर्धचंद्र शाम को जल्दी अस्त हो जाएगा, जिससे एक उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आसमान में अंधेरा छा जाएगा। सबसे अच्छा दृश्य आधी रात के बाद किसी अंधेरी जगह से होगा। उल्काएं बूट्स तारामंडल से विकीर्ण होंगी, लेकिन आकाश में कहीं भी दिखाई दे सकती हैं।

चित्र साभार hindi.webdunia.com

बच्चों, शुक्र ग्रह को देखने का यह अच्छा समय है। हम दिनांक 10 जनवरी को शुक्र को बहुत साफ तरीके से देख सकते है। यह हमें शाम के आकाश में क्षितिज के ऊपर अपने उच्चतम बिंदु पर होगा। सूर्यास्त के बाद पश्चिमी आकाश में चमकीले शुक्र ग्रह को देख सकते है।

इसी क्रम में दिनांक 16 जनवरी को मंगल ग्रह को देखने का मजा ही कुछ और है। लाल ग्रह पृथ्वी के सबसे करीब होगा और इसका चेहरा सूर्य से पूरी तरह प्रकाशित होगा। यह वर्ष के किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक चमकीला होगा और पूरी रात दिखाई देगा। मंगल ग्रह को देखने और उसकी तस्वीर लेने का यह सबसे अच्छा समय है। एक मध्यम आकार की दूरबीन आपको ग्रह की नारंगी सतह पर कुछ अंधेरे विवरण देखने की अनुमति देगी।

दिनांक 13 जनवरी – पूर्णिमा। चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह चरण 22:28 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को शुरुआती मूल अमेरिकी जनजातियों द्वारा वुल्फ मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह वर्ष का वह समय था जब भूखे भेड़ियों के झुंड अपने शिविरों के बाहर चिल्लाते थे। इस चंद्रमा को ओल्ड मून और मून आफ्टर यूल के नाम से भी जाना जाता है।

चित्र साभार www.hindi.astroyogi.com

दिनांक 29 जनवरी – अमावस्या। चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 12:37 यूटीसी पर होता है। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है।

चित्र साभार www.myjyotish.com

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(12 जनवरी 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	6:23	16:42	11:32	दुर्बल
शुक्र	10:09	21:38	15:53	अच्छा
मंगल	18:16	8:12	1:14	अच्छा
गुरू	14:59	04:40	21:50	अच्छा
शनि	10:31	22:03	16:17	सामान्य
यूरेनस	13:49	03:14	20:31	सामान्य
नेपच्यून	11:03	22:57	17:00	दुर्बल

टेबल साभार www.timeanddate.com

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों आप अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय आकर नई-नई पुस्तके पढ़ सकते हो।

यहां के सामुदायिक पुस्तकालय में खिलौने, पेन्टिंग आदि का प्रत्येक शनिवार एवं रविवार को आयोजन होता है। इसमें आप आकर अपनी पसन्द की पेन्टिंग बना सकते है। इस पेन्टिंग को संस्था द्वारा ऑन लाईन प्रकाशित बाल पत्रिका 'चहल-पहल' में प्रकाशन हेतु दे सकते हो। संस्था द्वारा समय समय विभिन्न प्रकार की गतिविधियां आयोजित की जाती है, इसमें भी आप भाग लेकर बहुत कुछ नया सीख सकते हो।

पुस्तकालय का समय - प्रात: 11:00 से सायं 6:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com